E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

गोंड जनजाति की संस्कृति एवं चित्रकला की प्रासंगिकता

डॉ. मीरा जैन

विभागाध्यक्ष

चित्रकला विभाग

शा.जे.सी.मिल, कन्या महाविद्यालय

ग्वालियर (म.प्र.)

केदार सिंह उलाड़ी

विषय–चित्रकला

जीवाजी

विश्वविद्यालय

ग्वालियर (म.प्र.)

Paper Received date

05/05/2026

Publishing Date

10/05/2026

DOI

https://doi.org/10.5281/zenodo.20662331

IMPACT FACTOR 5.924

शोध–प्रपत्र

गोंडों की चित्रकला और अन्य जनजातियों से अलग है उसका कारण प्रत्येक जनजाति के अपने विशेष देवी–देवता और लोकदेवता है जिनके आधार पर बहुत–सी रीति–रिवाज एवं परम्पराएँ सभी की अलग–अलग है, जिसके आधार पर आदिवासी चित्रकला का विकास हुआ है। कोई भी जनजाति प्रथाएँ, परम्पराएँ, अनुष्ठान, मान्यताये, स्थिर नहीं है, इनमें समय–समय पर परिवर्तन होता रहता है, जिस कारण से चित्रकला भी समय के अनुसार बदली है, जो उनकी जनजाति समाज की विशेषता है। गोंड जनजाति में प्रमुख रूप से गोंड प्रकृति के नजदीक होने के कारण उनके रोमांचकारी प्रयास है जिनमें विभिन्न प्रकार वनस्पतियाँ टेगु और जनजाति के चिन्हों को चित्रकला के माध्यम से उन्हें आगे बढ़ाया। गोंड संस्कृति भारत की प्राचीनतम आदिवासी संस्कृतियों में से एक है। गोंड जनजाति मुख्य रूप से मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, महाराष्ट्र, तेलंगाना, आंध्र प्रदेश और ओडिशा के वन एवं पहाड़ी क्षेत्रों में निवास करती है। मध्य प्रदेश के मंडला, डिंडौरी, बालाघाट, छिंदवाड़ा तथा सिवनी जिले गोंड संस्कृति के प्रमुख केंद्र माने जाते हैं। गोंड संस्कृति प्रकृति–आधारित, सामुदायिक और लोकपरंपराओं से समृद्ध संस्कृति है, जिसमें प्रकृति, मानव और देवत्व के बीच गहरा संबंध दिखाई देता है।

गोंड समाज मूलतः प्रकृति–पूजक है। गोंड लोग सूर्य, चंद्रमा, पृथ्वी, जल, पर्वत, वृक्ष तथा विभिन्न जीव–जंतुओं को पूजनीय मानते हैं। इनके प्रमुख आराध्य देव बड़ादेव (परसा पेन) हैं, जिन्हें समस्त सृष्टि का रक्षक माना जाता है। इसके अतिरिक्त ठाकुर देव, खेरमाई, नारायण देव, बूढ़ा देव तथा ग्राम देवताओं की भी पूजा की जाती है। धार्मिक अनुष्ठानों में बैगा या पुजारी की महत्वपूर्ण भूमिका होती है।

गोंड जनजाति की लोक संस्कृति संबंध ग्रामीण संस्कृति से है जिसमें चित्रकला के अलावा बहुत सी जनजाति मांगलिक भवन से ओत प्रोत है, उसमें मंडला एवं डिंडौरी जिला का विस्थापन एवं विकास पक्ष को, अपने प्रभुत्व के द्वारा दर्शाया गया गोंड कला में संस्कृति के विविध आयाम है, जो प्रमुख रूप सांस्कृतिक मूल्यों को सुरक्षा देता है जिसमें कई प्रकार की कला एवं संस्कृति का समन्वय पाया जाता है।

आदिवासी अपने धर्म और आर्थिक विश्वासों के प्रति बहुत दृढ़ होते है। उनके देवी–देवता है। **''दुल्हा पैन नारायण देव, पुर्ठकी, गराहा माता, मरा पैन होलेराम और बरिया गोंडों के देवी–देवता है। उन्हीं देवताओं के आस पास इनके सभी त्यौहारों की व्यवस्था होती है। त्यौहार बहुत विचित्र और विलक्षण रस्मों के साथ मनायें जाते है। त्यौहारों का इनकी धार्मिक प्रवृत्तियों से निरन्तर संबंध रहता है।''**

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

गोंडों का शरीरिक संरचना सुघटित होती है इनका चेहरा चपटा माथा चोड़ा नाक चपटी, एवं नथुने चोड़े होते है। इनकी आंखे काली, पल्के पुष्प एवं बाहर की और ओसतन होती है। गोंड स्त्रियां काली, पुष्ट और चपल होती है। **''उनमें शरीरिक क्षमता अधिक पायी जाती है जिससे वे जीवन के प्रति उनका दृष्टिकोण सशक्त ताकतवर उर्जामयी होता है स्त्री और पुरुष की बनावट में काफी अन्तर होता है उनके शरीर वातावरर्णीय कारको का प्रभाव होता है।''**

''गोंड सदैव अभावों में जीना पसंद करते है। वे अपनी मानसिक परेशानियाँ, नृत्य संगीत, हास्य आदि भुला देते है वे कर्म पर विश्वास करते है। गोंड महिलाएँ स्वभाव से सहज, लचीली, और मेहनती होती है। घर, खेल, मजदूरी और बाजार में गोंड स्त्रियों की बराबर हिस्सेदारी होती है।''

गांव का मुखिया मुकद्दम होता है मुकद्दम सरकार को लगान वसूल कर देता है, इनकी नियुक्ति परम्परागत होता है। पिता के बाद पुत्र को मुकददम होता है, कही-कही अन्य व्यक्ति भी गोतिया या मुखिया का काम करता है, मुकददम की सहायता के लिए कोटवार नियुक्त किया जाता है सरकारी सूचनाओं एवं अधिकारों का मुकददम व्यवस्थित करता है मुकद्दम का सम्बंध पंचायती राज्य व्यवस्था से है, वर्तमान में गोंड परिवार के लोग धीरे-धीरे ई-गर्वनेंस से जुड़ते जा रहे है, जिससे लोगों में जीवन जागरुकता आ रही है, जीवन बदल रहा है।

गोंडों का आर्थिक आधार सामान्यतः बहुत कमजोर होता है यद्यपि राजगोंड सम्पन्न होते है उनकी जीविका के साधन बहुत कम और परम्परागत होते है। रोटी, कपड़ा और मकान सभी की प्रमुख आवश्यकता होती है। सामान्यतः गोंड अपने खेंतों में दो फसलें लेता है धान, कोदो, कुटकी, तिलहन मक्का, तिल्ली आदि की फसल बोयी जाती है। **''रबी में गेहूँ, चना, राई, मसूर, अलसी आदि की फसल भी बोता है, दो-दो फसल लेने के बाद भी एक गोंड परिवार का वर्ष भर गुजारा ठीक ढंग से नहीं होता है।''**

गरीबी और आर्थिक तंगी के कारण ये लोग साहूकार के कर्जदार है। परम्परागत ग्रमों में तीन चौथाई आदिवासी परिवार ऋण- ग्रस्तता की जिंदगी जी रहे है ऋण ग्रस्तता का प्रमुख कारण शादी-विवाह मृतक संस्कार में होने वाला खर्चा भी शामिल है, इसके अलावा कुछ लोग भुखमरी के कारण से ही खेती के काम काज के बहाने कर्ज लेते है। इन्हें आसानी से कर्ज प्राप्त हो जाता है, परन्तु कर्ज की अदायगी में इन्हें काफी कठिनाईयाँ उठानी पड़ती है अंत में जब कोई भी अन्य उपाय नहीं होता तो ये अपने बच्चों को हलवाही के लिए मजबूरन भेजते है। इस धन्धे के अंतर्गत हले चलाने, खेत जोतने के लिये गृहस्थ के घर में ही रहते है इस काम के लिये हलवाहा एवं गृहस्थ के बीच पूरे एक वर्ष का ठेका होता है। अन्य शब्दों में हलवाहा बंधुआ मजदूर की भांति होता है।

नींव खोदने के पूर्व गोंड नारियल, घी, गुड़ से पूजा करना कभी नहीं भूलता। वैसे गोंड मकान बनाने से पूर्व मंगल, अमंगल, भूत-पिशाच बाधा, वंश वृद्धि या क्षय आदि के बारे में अत्यधिक सोच-विचार कर लेता है, तब ही मकान बनाना शुरु करता है।

मंडला एवं डिंडौरी में वेशभूषा आदिवासियों की एवं अन्य जाति की अलग-अलग है पुरुष वर्ग विशेष रुप से धोती और बंडी पहनता है महिलाएं पोलका एवं धुतिया पहनती है। तथा बहुत सी महिलाएं कांच बनाकर पहनती है। युग परिर्वतन के साथ सभी महिलाओं ने अपने जीवन शैली को बदला है।

मंडला एवं डिंडौरी के आदिवासी एवं अन्य जातियों के आभूषण अलग-अलग है आदिवासियों के महिलाओं के आभूषणों में सूतिया, गरसूली, पैरों में पहनने वाले तोड़ा, कमर में बाँधने वाली करधनियाँ, भुजां में लगाने वाली बाजू बंध, कलाई में छन्नी, नाक में लोंग, एवं कान में झुमका पहनने की परम्परा है, परन्तु आधुनिकता

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

का प्रभाव पड़ने के कारण आदिवासी महिलाओं ने अपने पारम्परिक आभूषणों को त्याग दिया और उसके स्थान पर नये आभूषणों को अपना लिया।

आदिवासी गोंड परिवारों में गोदना की संस्कृति है गोदना आभूषणों की पूर्ति करते है यह मत सौन्दर्यशास्त्र से सम्बन्धित है, हमारे समाज में आभूषणों का महत्व है जो महिलाओं के लिए प्रिय होते है आभूषण हमेशा बुरे वक्त में काम आते है।

गोंड परिवारों के आदिवासी लोग कामों में आदिवासी बाला पहनते है। (विशेष प्रकार के बाला) महिलाओं की तुलना में पुरूष कम आभूषण पहनते है पुरूष स्त्री की दुर्बलता को छिपाने के लिए आभूषण का सहारा लेता है, अधिकतर परिवारों में आभूषण एवं श्रृंगार का सम्बन्ध रोचक मनोविज्ञान से है।

महिलाओं श्रृंगार रस से अधिक प्रेम होता है वैदिक एवं उत्तर वैदिक काल में महिलाऐं वनस्पतियों का प्रयोग करती थी इसके अलावा परिर्वतन होने के साथ-साथ बहुत सी महिलाओं में श्रृंगार की क्रमिकता में परिर्वतन हुआ इसके स्थान पर चन्दन, हल्दी दूध, दही और बेशन का प्रयोग करने लगी इसके अलावा कृत्रिम श्रृंगारों प्रचलन बढ़ा तो विज्ञापन के माध्यम से विभिन्न उत्पाद बिकने लगी वर्तमान की महिला एवं पुरूष विज्ञापन में विश्वास करती है विज्ञापन युक्त उत्पादों को खरीदते है।

श्रृंगार हमेशा रोचक होता है प्रत्येक महिला श्रृंगार के माध्यम से अपनी जीवन शैली को बदल लेती है। पुरूष को आकर्षित करने के लिए श्रृंगार एक हथियार की तरह काम करता है। आदिवासियों में शरीर गुदाने की प्रथा सबसे अधिक है। गोदना गुदवाने के पीछे यही भावना है कि ये स्त्री के सच्चे जेवरों की निशानी है, जो मरते समय भी उसके साथ जाती है और और देवता इससे प्रसन्न रहते हैं। गोदने शरीर को सुन्दर और स्वस्थ बनाते हैं। इस तरह की धारणा प्रत्येक आदिवासी में देखी जा सकती है।

गोंड बाँह, हाथ, पोंहचा, गले, छाती, मस्तक, पैर आदि शरीर के विभिन्न भागों में छः-सात वर्ष से गुदवाना शुरू करते हैं। मण्डला में सबसे पहले पोहचा गुदवाते हैं। चेहरे पर बायीं आँख और गाल पर टिपका गुदवाया जाता है। नाक पर तीन टिपका गुदवाते हैं। फिर बाँह आदि पर गुदवाने का कम जारी रहता है। मण्डला के गोंड केवल पैरों के गोंड में गुदवाते हैं। शरीर पर गुदने धारण करना महिलाओं के लिए सौभाग्य की बात है। गोंड पुरूष कम गुदने गुदवाते हैं। महिलाओं के गुदनों में कई रूपाकारों का समावेश होता है। बाँह, छाती, मस्तक, पोहचा आदि पर अलग-अलग तरह के परम्परागत गुदने होते हैं, जिन्हें उन्ही जगहों पर गुदवाना अनिवार्य है।

गोंड में गुदने बादी जाति की महिलाएँ गोदती हैं। बदनिन का गोंड समाज में बड़ा सम्मान है। गुदवाने के लिए बदनिन को आमंत्रित किया जाता है। नेग दिया जाता है। कभी-कभी बदनिन स्वयं गाँवों में फेरी लगाती है। गोदना के बदनिन पाँच रूपये से लेकर पचास रूपये तक मोल भाव करती है ऊपर से बिदागी भी प्राप्त कर लेती है।

गुदने की स्याही बदनिन स्वयं तैयार करती है पहले रमतिला को भूँज लेते हैं। भूँजने से रमतिला का लोंदा बन जाता है, लोंदे को खपरेल मे जलाकर काजल बना लिया जाता है। पानी में काजल को फेंटकर गाढ़ी स्याही बना ली जाती है। काजल से पहले शरीर पर जो आकृति गोदना हो उसे बना लिया जाता है। फिर गोंडों में तीन से पाँच के समूह से काजल स्याही में डुबो- डुबोकर बनाई हुई आकृतियों पर चुभाते चले जाते हैं। गुद जाने के बाद गोबर और पानी से शरीर का धो दिया जाता है। इससे गुदना पकता नहीं है। गुदवाते समय लड़कियों को काफी दर्द महसूस होता है। कुछ ही दिनों में शरीर पर ये अमिट निशान बन जाते हैं और पूरी जिन्दगी गोंड एवं अन्य आदिवासी महिलाओं के शरीर पर जगमगाते रहते हैं। सबसे अधिक कठिन गुदना छाती का होता है। चाहे जितना कष्ट हो गोंड अभी भी परम्परागत ढंग से गुदवाते हैं।

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

शरीर के विभिन्न अंगों के नाम से गुदने को पुकारा जाता है। जैसे पहुचा गुदना, गोंड गुदना, बाँह गुदना छाती गुदना आदि शरीर के विभिन्न अंगों में गुदनों की आकृतियाँ एक सी होती हैं। हर अंग पर अलग–अलग रूपाकार गोदे जाते हैं।

बाँह पर धंधा, माछी, मुरगा, दोहरी जोहरा, घोड़ा, फूल, सीताफल, बिरछा, टिपका, चूल्हा आदि। पोहचा में बिरछा, पोथी, अद्धा, करलिया आदि छाती पर पुतरिया, टिपका, गोंइ में घोड़ा, मुरगा पुतरिया, फूल, मुरला, पोथी, बिछी आदि परम्परा से बनाये जाते हैं। इस समय शांति बाई, मंगला बाई, कुशल गुदने गोदने वाली है। **शरीर पर मछली, घोड़ा, मुरगा, बिरछा, फूल बनाने का क्या तात्पर्य हो सकता है? प्रकृति के उपदानों का आदिवासी जीवन से बहुत गरहा सम्बंध है और प्रत्येक गुदना आकृति का कोई न कोई महत्व और अर्थ है।'**

गोंडों में गुदवाने की परम्परा है, इसका सम्बंध सौन्दर्यीकरण से है शरीर के विभिन्न अंगो को महिलाऐं पुरूषों की अपेक्षा अधिक गुदवाती है गोंड और बैगा जनजातियों में गुदने वाली महिला को बदिनन बोलते है।

गोंड जनजाति का प्रमुख नृत्य सैला रीना है जो विशेष तौर से विवाह उत्सव, दशहरा और दीवाली लोकनृत्य के माध्यम से अपने कला के प्रदर्शन करते है नृत्य करते समय, चटकोला, टिमकी नगाड़ा, एवं खंजरी को बजाकर अपनी खुशी व्यक्त करते है कुछ लोग चिकारा, शहनाई, झन्ही बजाकर खुशी व्यक्त करते है।

गोंड देवलोक के माध्यम से इस बहुत कम और भागते समय में हम एक प्राकृतिक समय, बहुत बड़ी धरती, सबसे जीवन की समष्टि की कथा में जाते है, उसका स्मरण करते है। पिछले वर्ष इन्हीं दिनों अकादमी ने कोरक देवलोक पर केन्द्रित एक पुस्तक हिन्दी अंग्रेजी में प्रकाशित किया था। युवा अध्येयता श्री धमेन्द्र पारे ने इस श्रृंखला में अकादमी के लिए इस वर्ष विस्तृत सर्वेक्षण के बाद गोंड देवलोक की अवधारणा और स्वरूप पूजा और अनुष्ठान, शक्ति और उसके रूप प्रकट होते है। हम सहज ही देख सकते है के जनजाति देवलोक में विभिन्न देवों और देवियों की धारणा उनके प्रकट स्वरूप से अधिक स्पष्ट और पूर्ण है– स्वंय 'धारणा' के साथ मनुष्य को एक विराट स्वतंत्रता मिलती है, जो अन्यथा एक स्थिर स्वरूप के बाद खो जाती है।

गोंडवाना क्षेत्र में चाहे वे गोंडजन हो या अन्य जनजातियों, सभी में जादू टोनचा व भूत–प्रेतों पर विश्वास रखते हैं। यह अंधविश्वास हिन्दू ग्रामीणों में भी विद्यमान है। ऐसा अधविश्वास न केवल अशिक्षितजनों में व्याप्त है, वरन अनेक शिक्षितजनों में भी उतना ही प्रबल रूप में देखने को मिलता है। नारायणपुर के आसपास के ग्रामों में मेरे अनेक परिचित तथा कुछ मुरिया मित्र हैं। उनके परिवारों में यदि कोई व्यक्ति बीमार हो जाता है तो वे उपचार हेतु उसे बैगा गुनिया के पास ले जाते हैं। उनके रोग का कारण शत्रुओं द्वारा किया गया जादू–टोन्हा है, जिसका उपचार केवल गोंड द्वारा किया जा सकता है। मैंने उन्हें समझाया कि ठीक है तुम गुनिया से भी झाड़–फूंक करवाओ, परन्तु अस्पताल जाकर वहीं से भी दवाएँ लो। वास्तव में इस अंधविश्वास के अनेक कारण है। जनजातीय क्षेत्रों में पर्याप्त चिकित्सकीय सुविधाओं का अभाव होना एक प्रमुख कारण है। गुनिया की चिकित्सा से झाड फूक में आस्था से उनका आत्मबल बढ़ने पर वे रोग से लड़ने की क्षमता विकसित कर पाते हैं।

समाज विज्ञानियों में गोंडों के कई–कई भेद किये हैं जैसे– देवगोंड, राजगोंड, नागवंशी गोंड, रावणवंशी गोंड और धुर गोंड आदि। देवगोंड उन गोंडों को कहा जाता है। जो लगभग ब्राह्मणों की तरह अपने आप को मानते है। किसी की झूठी चिलम भी नहीं पीते दूसरे गोंड राजगोंड कहलाते है। राजगोंड कहने वाले बहुत

E-ISSN No: 2456-6713 Print ISSN No: 3048-6459

International Educational Applied Research Journal

Peer-Reviewed Journal-Equivalent to UGC Approved Journal

A Multi-Disciplinary Research Journal

व्यापक रूप से मिलते है। ये अपने आप को राजकुल का मानते है। **कुछ गोंड अपने आप को नागवंशी गोंड कहते है। और मानते है कि वे नागकुल के है। नागवंशी गोंड छत्तीसगढ़ में बताये जाते है। मंडला- डिंडौरी और रामनगर चौगान के आसपास के कई गाँवों में मुझे रावणवंशी गोंड मिले। वे लोग रावण की स्तुति में गीत भी सुनाते है हरदा, बैतुल, होशंगाबाद, खंडवा आदि में रावणवंशी कहलाने वाले गोंड नहीं मिले।"**

गोंड चित्रकला का सम्बंध विभिन्न प्रकार के जनजाति गोत्रो से है जिसमें गोंड देवी-देवता, मंडला एवं डिंडौरी जिले क्षेत्र के गोंड देवी-देवता जो गोंड चित्रकला के प्रमुख माने जाते है। इनमें ठाकुर देव, बारियार देव, चौसठ योगिनी, बजारी देवी, मरखी देवी, मुरकट्टी देवी, बढ़ावनदेवी प्रमुख गोंड चित्रकला में देवियों के स्थान, स्थापना, अनुष्ठान, एवं उनके महत्व को व्यक्त किया जाता है। इसके अलावा साजा वृक्ष और परधान के नहक की कथा उन चित्रों के माध्यम से उनको अवतीण करते है।

चित्रकला का इतिहास उतना ही पुराना कहा जा सकता है। जितना मानव का इतिहास। मनुष्य ने जिस समय प्रकृति की गोद में नेत्रोन्मीलन किया उस समय से ही उसने निर्माण के तारतम्य से अपने जीवन को सुखी तथा समृद्ध बनाने की चेष्टा की और इस निर्माण कार्य के फलस्वरूप उसने ऐसी कृतियों का सृजन किया जो उसके जीवन को सुखद और सुचारु बना सके। इसी समय से मनुष्य की ललित भावना भी जाग उठी और उसने अपनी मूक भावनाओं को अनगढ़ पत्थरों के यंत्रों तथा तूलिका से बनी टेढ़ी-मेढ़ी रेखा- कृतियों के रूप में गुहाओं (गुफाओं) और चट्टानों की भित्तियों पर अंकित कर दिया। उसके जीवन की कोमलतम भावनायें तथा संघर्षमय जीवन की सजीव झाँकिया आदि मानव की कला-कृतियों के रूप में आज भी सुरक्षित है। आदिकाल से आज तक मनुष्य रेखा तथा आकार, लक्षण तथा कर्षण के द्वारा अपनी भावनाओं को व्यक्त करता चला आ रहा हैं

गोंडवाना एक विशाल क्षेत्र है तथा गोंड जनजाति भारत की सर्वाधिक जनसंख्या वाली जनजाति होने के कारण वह स्वयं भी लगभग पचास उपजातियों में बटी हुई है। ये सभी समूह अन्तर्विवाही हैं। इन्ही कारणों से इनके नृत्य तथा गीतों में अत्याधिक विविधता देखने को मिलती है। गोंडवाना में अन्य बहुत सी जनतातियाँ भी गोंडजनों के साथ-साथ निवास करती हैं, जिनकी अपनी भी विशिष्ट नृत्य शैलियाँ हैं। इसके साथ ही दीर्घकाल से साथ-साथ रहने के कारण इन सभी जनजातीय समूहों में सांस्कृतिक आदान-प्रदान होता रहा है। कुछ पर्व-त्योहार इन सभी समूहों में समान रूप से प्रचलित हैं, जिन्हें वे मिल-जुल कर मनाते हैं। यहाँ निवास करने वाली अन्य प्रमुख जातियों में कोरकू, बैगा, कोल, बिंझवार, पण्डो, कुमार , कंवर, कोरवा तथा उराँव हैं। त्योहारों को मिल-जुल कर मनाने के कारण उनके नृत्यों पर एक दूसरे का प्रभाव पड़ना स्वाभाविक ही है।

संदर्भ सूची

1. नायडू पी.आर. भारत के आदिवासी विकास की समस्याएँ, पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली संस्करण, 1997, पृष्ठ-14
2. नायडू पी. आर. भारत के आदिवासी विकास की समस्याएँ, राधा पब्लिकेशन , नई दिल्ली, संस्करण 1997, पृष्ठ क्र 25
3. नायडू पी. आर. भारत के आदिवासी विकास की समस्याएँ, राधा पब्लिकेशन , नई दिल्ली, संस्करण 1997, पृष्ठ क्र 26
4. नायडू पी. आर. भारत के आदिवासी विकास की समस्याएँ, राधा पब्लिकेशन , नई दिल्ली, संस्करण 1997, पृष्ठ क्र 27
5. पाण्डेय वन्दना, सम्पदा मध्यप्रदेश की जनजातीय सांस्कृतिक परम्परा का साक्ष्य, आदिवासी लोक कला एवं बोली विकास संस्कृति भोपाल, संस्करण 2018, पृ. 353
6. पारे धमेन्द्र, गोंड देवलोक, आदिवासी लोक कला एवं तुलसी साहित्य अकादमी मध्यप्रदेश संस्कृति परिषद, का प्रकाशन संस्करण-2008, पृष्ठ 40